कार्य पत्रक (कक्षा-दसवीं)

नाम : .....अनुक्रमांक ..... दिनांक .....

सूरदास

पठित पद्यांश (क)

उधौ,तुम हौ अति बड़भागी |
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी |
पुरइनि पात रहत जल भीतर,ता रस देह न दागी|
ज़्यौं जल माहँ तेल की गागरी ,बूंद न ताकौं लगी|
प्रीति -नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी|
'सूरदास 'अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज़्यौं पागी|

उपर्युक्त पद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए :

1 शब्दों के अर्थ बताइए:

बड़भागी- ---------- पुरइनि- ----------

अपरस- ---------- बोरयौ- ----------

2 प्रस्तुत पद्यांश में गोपियाँ किसे संबोधित कर रही हैं और क्यों ?

---

3 उद्धव के विचार गोपियों के विचारों से कैसे अलग हैं ?

---

4 गोपियाँ अपनी बात सिद्ध करने के लिए क्या- क्या तर्क देती हैं ?

---

5 'कमल के पत्ते' तथा 'तेल की गागर' में क्या समानता है ,गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना इनसे क्यों की है ?

---

6 उपर्युक्त गदयांश में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

---

7 -पद के सामने निहित अलंकारों का नाम लिखिए :

प्रीति नदी- ----------

चींटी ज़्यौं पागी- ----------

पुरइनि पात- ---------- ---

1 हालदार साहब किसकी मूर्ति के बारे में सोच रहे थे?

.....

2 'दिल्ली चलो ' और तुम मुझे खून दो नारे किसने और कब दिए ?

.....

.....

3 हालदार साहब को मूर्ति के बारे में क्या विचित्र लगता था ?

.....

.....

4 हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों का प्रयास सराहनीय क्यों लगा?

.....

.....

5 हालदार साहब को कौन सा आइडिया बहुत अच्छा लगा ?

.....

.....